बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष-07, अंक-06

मूल्य 10/-

विशेषांक
प्राकृतिक आपदा

जून 2015

किलकारी लाल

प्यारे दोस्तो,

आजकल प्राकृतिक आपदाओं को लेकर हम सभी के मन में लाखों सवाल उठ रहे हैं। कभी हमारी जुबां पर भूकंप को लेकर प्रश्न आते हैं तो कभी आँधी-तूफान-बाढ़ आने जैसी बातों को लेकर उलझन सी रहती हैं। हम इन सवालों के घेरे में बुरी तरह से फँस गए हैं। हमने कभी सोचा ही नहीं है कि-अगर प्राकृतिक आपदा आ जाए तब क्या होगा ?हम सोचेंगे भी कैसे भाई ?हमारे पास तो वक्त ही नहीं है। हम तो बड़े-बड़े भवन बनाने में रात-दिन लगे हैं। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पागलों की तरह भटकते रहते हैं। आज जब भूकंप आया है तो हमारी सारी जरूरत की चीजें फीकी पड़ने लगी हैं। हम सभी घर छोड़कर जान बचाने के लिए जगह तलाशने लगे हैं। हर चेहरे पर बार-बार एक ही सवाल दिख रहा है आखिर ऐसा क्यों ? तो चलिए दोस्तों इसीसे जुड़ी कुछ बातें हो जाये।

''भईया-भईया तुम्हें कुछ पता है।'' छोटी बहन राखी डरते हुए बोली। ''नहीं पर तुम इतनी डरी-सी क्यों हो?'' भाई राहुल ने पूछा ''अरे भईया जब तुम क्रिकेट खेलने मैदान गए थे, उसके कुछ देर बाद अचानक फिर से धरती डोली थी। इससे घबराकर दादी बोल रही थी कि धरती पर ज्यादा अब पाप हो रहा है, जिसके कारण धरती के नीचे जो नाग देवता हैं, वे हमलोगों से गुस्साकर तिलमिला उठे हैं। वही इस मुसीबत के कारण हैं।'' राखी लटपटाती हुई बोली। इस पर राहुल ने हँसकर कहा, ''धत पगली, ऐसा थोड़ी ही है।'' ये तो प्राकृतिक आपदा है; जो कभी भी आ सकती है। हमारी धरती मुख्य तौर पर चार परतों से बनी हुई है। पहला इनरकोर, दूसरा आउटकोर, तीसरा मैंनटल और चौथा क्रस्ट है। जब ये आपस में टकराती हैं तभी भूकंप आता है। लेकिन इससे डरना नहीं चाहिए, बल्कि हमेशा हमें सर्तक रहना चाहिए। ''लेकिन भईया, यहाँ तो सिर्फ बड़े-बड़े भवन बने हैं और आस-पास कहीं भी जगह खाली नहीं है। हम बचेंगे भी तो कैसे?'' ''निराश होकर राखी बोली। ''यह तो है किन्तु हम सभी को ऐसे वक्त में चौकन्ना रहना होगा। जब भूकंप आया तो टेबुल के नीचे झट से छुप जाना चाहिए या खाली मैदान की ओर जाना चाहिए ताकि हम सुरक्षित रह सकें।

तो दोस्तों जब भी भूकम्प का झटका महसूस हो आप भी ऐसा ही करना चाहेंगे न !

आपका - मुनटुन राज
कक्षा-X

प्रेरक प्रसंग

ईश्वर का अस्तित्व

एक बार महर्षि रमण के पास एक युवक आया और बोला, ''स्वामीजी, क्या आप मेरी शंकाओं का निवारण करेंगे?'' ''अवश्य!'' महर्षि ने उत्तर दिया। उस युवक ने पहला प्रश्न किया, ''इस संसार में इतना घोर अनर्थ कैसे हो रहा है ?''

''यह प्रश्न तुम भगवान् से क्यों नहीं पूछते?'' - महर्षि ने प्रति प्रश्न किया। युवक ने उत्तर दिया, ''मगर मैं उनके पास जाऊँ कैसे?वे दिखाई तो देते नहीं। वास्तव में मुझे उनके अस्तित्व पर ही शंका है।'' ''भला ऐसी शंका क्यों है तुम्हें?''- महर्षि ने पुन: उससे प्रश्न किया।

''सीधी सी बात है,'' युवक बोला, ''जब तक ईश्वर दिखाई न दे, तब तक कैसे जाना जा सकता है कि ईश्वर भी इस संसार में विद्यमान है?''

रमण महर्षि बोले, ''तुम ठीक कह रहे हो? मगर मेरे प्रश्न का जवाब दो, क्या तुम्हारे पास दिमाग है?'' ''अवश्य !'' उसने उत्तर दिया। - ''मगर मुझे तो वह दिखाई नहीं देता, तब क्या मैं ऐसी धारणा बना लूँ कि तुम्हें दिमाग है ही नहीं ?'' बस, यही बात ईश्वर के बारे में भी है। जिस प्रकार दिमाग के दिखाई न देते हुए भी हम ऐसी धारणा बना लेते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को दिमाग होता है, उसी प्रकार भगवान् के दिखाई न देने पर भी उनके अस्तित्व के बारे में शंका नहीं करनी चाहिए।'' वह युवक इस तर्क से संतुष्ट हो प्रसन्नता से वापस लौट गया।

प्रस्तुति-मनीष
कक्षा-XII

एक यात्रा ऐसी भी

आज मत जाओ भईया अगर जरूरी ना हो तो, मोहनी ने गोलू को रोकते हुए कहा। तुम मेरी चिंता छोड़ो ना कहकर गोलू दीवार पर घड़ी के बाए तरफ टंगी रैकेट उठाकर पीठ पर टांग ली। गोलू ने दरवाजे की कुंडी खोली और चल दिया सुबह-सुबह खेलने के लिए। 6:30 में उसे पहुँचना था और वह उठा ही था 6:52 में। खट खट खट, वह सीढ़ियों से उतरता हुआ सीढ़ी के बाएँ तरफ बने खाली जगह पर चला गया। उसने अपनी जेब से हनुमान जी के रिंग वाली चाबी निकाली और साईकिल का ताला खोल निकल पड़ा सड़क पर। सुबह के 7:00 बज रहे थे। सड़क पर ताजी-ताजी हवा। हल्की धूप निकल चुकी थी। गोलू कदमकुआँ चौक पार करते हुए चूड़ी मंडी के छोर पर पहुँच चुका था। जहाँ ऑटो का ताँता लगा हुआ था। कई स्कूल बस भी गुजर रही थी। उसे पैडिल मारने में भारी महसूस हो रहा था। वह नीचे चक्का देखते हुए बोला-ओ सेट मैं तो हवा भरवाना भूल ही गया। हवा इतनी कम है। वह वैसे ही साईकिल चलाते हुए दुर्गा मॉदिर पहुँचा। अभी वह नाला रोड से गुजर रहा था। कई फर्नीचर की दुकान और दिनकर गोलंबर पार। हुए वह पहुँचा गोल्ड जिम, जो सड़क के दायें तरफ था। सड़क के बाँयें तरफ झुग्गी झोपड़ी थी। जो कई लोगो का निवास था। अब गोलू और आगे बढ़ा, वह सड़क के बाएँ तरफ चाय की और दाएँ तरफ हलवाई की दुकान से गुजरता हुआ पहुँचा प्रेमचन्द्र गोलंबर। सड़क के दाएँ तरफ प्रेमचन्द्र रंगशाला से गुजरते हुए पहुँचा राष्ट्रभाषा हिन्दी परिषद। अब गोलू राष्ट्रभाषा हिन्दी परिषद के बायें तरफ पहुँच चुका था। किलकारी के गेट पर मॉर्निंग प्रैक्टिस के लिए और मस्ती के लिए।

-अभिनंदन

पक्षी और बादल

ये भगवान के डाकिये हैं
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और
पहाड़ बाँचते हैं।
हम तो केवल यह आँकते हैं।
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

-राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

माथापच्ची

मोबाईल के सभी अंको से एक दूसरे को गुणा करने पर गुणनफल कितना होगा?

मन में एक डर

सुन नेपाल की घटना को,
छाती धधक उठी मेरी ।
हाय ! केवल चारों ओर,
लाशों की वहाँ थी ढेरी ।
बंधु-परिजन अलग हुए सब,
टूटे प्यारे रिश्तों के डोर ।
चारों ओर परिजनों की केवल,
रोहा-रोहट की थी शोर ।
इस हल्के से झटसे ,
बैठा मन में डर ही डर ।
रात-रात लोग जागे पार्कों में,
छोड़ अपना प्यारा सा घर ।
धरती पे ही जन्म लिए हम,
धरती में ही गए समाय ।
इस जीवन का न पता किसी को,
कब-कहाँ अंत हो जाय ।

कर दो माफ

हे धरती माँ,
हमसे क्यों गुस्साई ?
छोटे-छोटे बच्चों को तुम,
पराया क्यो बनाई ?
बड़े-छोटे भवनों को,
तुम थर-थर हिलाई ।
कही शॉट-शर्किट,
तो कहीं घर गिराई ।
दौड़ा-दौड़ा कर लोगों को,
इतना क्यों डराई ।
इतनी जल्दी क्यों,
अपने पास बुलाई ।
मानता हूँ की धरती पे,
हो रहा है पाप ।
हे धरती माँ,
कर दो न माफ ।

युवराज सिंह
वर्ग-V

जान बचाओ

जीवन के दो साथी हैं - सुखदा और विपदा,
दबे पाँव आ जाती है, प्राकृतिक आपदा।
कभी आँधी तो कभी तूफान,
कर जाते बहुत नुकसान ।
मूसलाधार वर्षा, घटाएँ घनघोर,
बिजली चमकती है बेजोड़ ।
भीषण गर्मी, भीषण सुखाड़,
नदियों में आ जाती है बाढ़ ।
फसलों का होता नुकसान,
मर जाते कितने किसान ।
मच जाता है हर ओर हड़कंप,
अचानक जब आता भूकंप ।
यह एक ऐसी मुसीबत है,
जिसका नहीं कोई समाधान ।
बचाव ही एक रास्ता है ।
जान बचाओ हे भगवान ! हे भगवान !

सम्राट समीर
वर्ग :-IXth

जन्हें कलाकार

राहुल, कक्षा-5

टिंकल, कक्षा-1

उमेश, कक्षा-2

सौरव, कक्षा-8

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

दिनेश, कक्षा-3

शिवा

प्रिंस, कक्षा-4

खेल

ताली बजाओ, नाम बताओ

इस खेल में जितने चाहे उतने बच्चे खेल सकते हैं । इस खेल का नाम है - ताली बजाओं नाम बताओ ।
सारे बच्चे गोल घेरे में बैठ जाएँ । एक बच्चा गोल घेरे के अंदर खड़ा रहेगा । जिसकी आँखो पर पट्टी बँधी रहेगी । घेरे में बैठा कोई भी बच्चा हाथ उठाकर ताली बजाए । बच्चा ताली बजाने वाले बच्चे के पास जाकर उसे उठाएगा और उसका नाम बताए । अगर नाम सही नहीं बताएगा तो वह बच्चा खेल से बाहर हो जाएगा । और सही बताया तो वही बच्चों के साथ घेरे में बैठ जाएगा और दूसरा बच्चा घेरे के अंदर आकर खेल को आगे बढ़ाएगा ।

तुलसी लवली
कक्षा - X

खोजबीन

प्राकृतिक आपदा क्या है

दोस्तों ! भूकंप और सुनामी दो ऐसी प्राकृतिक आपदायें हैं, जिसका संबंध पृथ्वी की आंतरिक संरचना से है । हमलोग जिस पृथ्वी पर रहते हैं, इसके अंदर आग की लहरें चलती हैं । आपको यह जानकर आश्चर्य लगेगा की पृथ्वी के अंदर का तापमान 1000° से0 से भी अधिक है । यहाँ उत्पन्न उर्जा तरंग की लहरें चट्टानों में कंपन उत्पन्न करती हैं । इस कंपन का केन्द्र जब स्थल खंड पर होता है तो उसे भूकंप कहते हैं, लेकिन जब महासागर की तली पर होता है तब यह सुनामी के नाम से जाना जाता है । सुनामी के प्रभाव से समुंद्र जल में कंपन उत्पन्न होता है । इस कंपन से जल में क्षैतिज गति उत्पन्न होती है । आंतरिक उर्जा से संचालित क्षैतिज प्रवाह का जल तटीय स्थल से टकराता है और तट पर सुनामी की विनाशलीला अर्थात् आपदा देखने को मिलती है ।

और जानते हो भूकंपीय घटनाओं का मापन भूकंपीय तीव्रता के आधार पर किया जाता है । भूकंपीय तीव्रता की मापनी 'रिक्टर स्केल' के नाम से जानी जाती है । इस मापनी के अनुसार भूकंप की तीव्रता 0 से 10 तक होती है । आघात की तीव्रता को इटली के भूकंप वैज्ञानिक मरैकली नाम पर जाना जाता है ।

यह देखा गया है कि 'रिक्टर स्केल' पर 8 से अधिक तीव्रता वाले भूकंप के आने की संभावना बहुत कम होती है जो 1 से 12 वर्षों में एक ही बार आते हैं । जबकि हल्के भूकंप लगभग हर मिनट पृथ्वी के किसी न किसी भाग में महसूस किए जाते हैं ।

आनन्द राज
कक्षा - XI

कुछ नया करें

आओ बाजा बनाएँ

तुमने कई तरह का बाजा देखा और बजाया होगा । अपने हाथ से बनाया हुआ बाजा बजाने में बहुत मजा आयेगा । इसके लिए कैमरे के रील का डब्बा, रद्दी स्केच पेन, रद्दी मोटा वाला रिफिल, बैलून, ब्लेड, कैंची, धागा जुगाड़ कर लें ।

अब रील के डब्बा का ढक्कन खोलकर अलग कर दो। डब्बा के पेंदी में कैंची के सहारे ऐसा छेद करो जिसमें स्केच पेन आसानी से अंदर तक पास हो जाय । स्केच पेन को आगे मुँह तरफ ब्लेड से काटकर अलग करो, पीछे वाले हिस्से यानि ढक्कन को निकाल दो । एक नली जैसा हो जायेगा । अब नली को डब्बे के पेंदी वाला छेद में डालो । फिर डब्बा के बीचो-बीच एक छेद करो । इस छेद में मोटर फिक्स कर डालो । डब्बा के ऊपर मुंह तरफ बैलून का एक हिस्सा पीछे से काटकर ढंक दो फिर धागे से बांध दो । स्केच पेन नली को थोड़ा उपर ठेलो, बैलून की सतह ऊँची हो जायेगा । अब रिफिल में फूंक मारो । तुम्हारा बाजा बजने लगेगा। खूब बजाओ और मजा लो ।

सुधीर

बुझो-बूझौवल

- पिताजी एक डब्बा लाए,
  न कुछ पिए, न कुछ खाए ।
  कान घुमाए तुरन्त वह बोले,
  हर देश की सैर कराए ।
- सुलझाने का संकेत देता,
  उलझाना है इसका काम ।
  चौपाइयों में वह है होता,
  बतलाओ जरा उसका नाम ।
- सिर पर मुकुट गले में थैला,
  उसका नाम बड़ा अलबेला ।
  रोज सबेरे चढ़े मुंडेर,
  जगाए दुनिया बांग अकेला ।
- गोल-गोल सा उसका शरीर,
  पेट में हवा पर फूटी तकदीर ।
  घंटो खाता सौ-सौ लातें,
  उछल कूद करता हवा से बातें ।
- कागज का यह घोड़ा अलबेला,
  पतली धागे की सुन्दर लगाम ।
  धीरे-धीरे छोड़ो धागे को,
  फुर्रफुर्र-फरफर उड़े आसमान ।
- लोहे का है एक मकान
  उसमें बैठा एक जवान
  पानी पीकर जीता है,
  सबको ठंढक देता है ।
- मैं अलबेला कारीगर
  काँटू काली घास
  राजा, रंक और सिपाही
  सिर झुकायें मेरे पास
- गज-गज करे गजन के फूल
  नौ सौ हाथी करे कबूल
  कहियो न मिले
  ये गजन का फूल ।

कहानी

जीने का मकसद

'भईया तुम यहाँ बैठे हो ? मैं तुम्हें घर पर, बगीचे में और खेतों में ढूँढ रहा था ।' वीरू, मुस्कुराते हुए पगडंडी पर पास तेजू के साथ ही बैठ गया । कितनी अच्छी बात है न भईया ! इस बार गाँव में सभी के पास खेतों में अच्छी फसल हुई है । सभी के पास ढेर सारे पैसे भी हो जाएंगे । बाबूजी कह रहे थे कि वो मुझे फिर से स्कूल भेजेंगे । अरे हाँ । दीदी की शादी भी तो अगले महीने ही होने वाली है । मैं तो शादी में कोट लूंगा । तुम क्या लोगे भईया?तेजू चुपचाप उसे देख रहा था और उसकी मासूमियत भरी बातों में खोया सोच रहा था आठ साल के इस उम्र में इतनी समझदारी कहाँ कि ये अच्छी पैदावार के अच्छे दाम समझे । इसे कहाँ मालूम होगा कि इतने कम पैदावार हुए इसी का तो रोना है । खून पसीना एक करके बाबूजी ने रबी बोयी। फसल भी अच्छी हुई । पर इन्हें अनाज के सही दाम ही नहीं मिल रहे । ऐसे में कैसे होगी अगले महीने दीदी की शादी? कैसे जा पाएगा मेरा भाई फिर से स्कूल? यही सोचते-सोचते तेजू की आंखो में आंसू आ गए। पंद्रह साल से वो यह सब देख रहा था । वह भी कभी वीरू की तरह ही अच्छे स्कूल में पढ़ने का ख्वाब देखा करता था । पर आज ये ख्वाब उसके छोटे भाई ने देखी थी जिसे तेजू कुछ भी करके, पूरा करना चाह रहा था । वीरू दोबारा पूछा 'भईया बताओ न तुम दीदी की शादी में क्या लोगे'? तेजू सोचा इसे सच्चाई बता देनी चाहिए झूठी तसल्ली कब तक दी जाएगी । वैसे भी हम किसान हैं । अपने अरमानों का खून करना ही तो हमारा धर्म है । तेजू वीरू से बोला - भाई अब ये नही हो सकेगा । वीरू थोड़ा प्यार और आश्चर्यभरी निगाहों से तेजू को देखते हुए पूछा 'क्यों नहीं हो सकेगा भईया'? तेजू उसे समझाते हुए बोला भाई इस बार जो फसलें हुई हैं ये सच है कि पिछले वर्षों से बहुत अधिक हैं । ये समस्याएं भी खत्म हो जाएगी पर परेशानी तो यह है कि इन्हे बोने से लेकर काटने में जितने पैसे खर्च हुए हैं, उतने पैसे भी इन अनाजों को बेचकर मुश्किल से मिलेंगे । यह सुनकर वीरू उदास हो गया । पल भर में उस मासूम की खूशी को भी ग्रहण लग गया हो। फिर भी उसने रोनी सूरत बनाते हुए तेजू से पूछा 'भाई क्या कोई रास्ता है जिससे फसलों के अच्छे दाम मिले ? तेजू उसे ढाँढस देते हुए बोला क्यों नहीं? आज बाबूजी शहर गए हैं, नीजी दुकानदारों और व्यापारियों से बात करने। अगर भगवान ने चाहा तो फसलों के अच्छे दाम जरूर मिलेंगे और तू स्कूल भी जाएगा । अब चल शाम हो गई, घर चलते हैं । वीरू को गोद में उठाते तेजू घर की ओर चल पड़ा ।

घर पहुँचकर दिन भर का थका तेजू गोद से वीरू को उतारकर, खटिया को आंगन में लाकर लेट गया । शायद बाबूजी अभी शहर से नहीं लौटे थे । अगर आए होते तो तेजू उनके साथ गेहूँ के बोरे भरता ।

अचानक उसने देखा बाबूजी खुशी से झूमते, घर आ रहे हैं । उनके सारे किसान साथी भी खुश हैं । घर पर आकर वो वीरू को गोद में उठाकर बोल रहे हैं कि अब हमारे खुशी के दिन आ गए हैं । हमारे सारे अनाजों को सेठ गाँव में आकर ले जाएंगे और अच्छे दाम भी मिलेंगे । तुरंत उसने देखा वीरू स्कूल ड्रेस पहने स्कूल जा रहा है । उसी क्षण उसने देखा उसकी दीदी की शादी बड़े धूम-धाम से हो रही है। वीरू कोट-पैन्ट पहने नवाब की तरह लग रहा था । बाबूजी भी पीली धोती कुर्ते में जँच रहे थे । माँ पर लाल रंग की साड़ी खूब फब रही थी । दीदी ऊपर से नीचे गहनों से लदी स्वर्ग की अप्सरा लग रही थी ।

यह सब तेजू अधखुली आंखो से नींद में देख रहा था फिर भी उसे बहुत अच्छा लग रहा था । उसके अधखुली आंखो को देख लग रहा था कि सच में सपने जिंदगी तो नहीं परन्तु जीने का मकसद जरूर बन सकती हैं ।

रानी कुमारी, कक्षा - XII

रोकें हम विनाश

किसने खलबली मचाई,
धरती मईया के कोख में,
जिसके कारण लोग सारे,
डूबे हुए हैं शोक में,
चलो हम सब चलें
उस भूकंप को रोकने ।

हम यूँ बैठ सकते नहीं,
हम भी हैं थोड़े जिम्मेदार,
चलो करे सेवा सबकी,
बनके सबके मददगार
सबसे पहले करें हम,
इलाज की व्यवस्था,
भूखे प्यासे लोगों को,
दे भरपूर नास्ता ।

जहाँ पड़े जरूरत,
वहाँ हम हो हाजिर,
संकट से ना घबराने वाले,
हम है बालक वीर ।
लड़ेगे अंत तक,
जब तक रहेगी आखिरी साँस,
बल बुद्धि तकनीक से,
रोकेंगे हम विनाश ।

अभिनंदन गोपाल

भूकंप का कहर

अचानक धरती हिल गई
इमारते मिट्टी में मिल गई
हल्ला-गुल्ला, दौड़ा-दौड़ी
छोड़ समान भागे बूढ़ा-बूढ़ी।

क्या धरती माँ हुई नाराज
देखा उसका चेहरा आज
धरती पर हो रहा है पाप
यह है धरती माँ का शाप।

क्यों करते हो मानव ऐसा ?
क्यों बन रहे हो दानव जैसा ?
क्यों लेते दूसरों की जान ?
तेरे जैसे उसके प्राण ।

कितने बेटे माँ से बिछड़े
कितने घर हुए टुकड़े-टुकड़े
मच गई दुनियाँ में हाहाकार
ईश्वर भी नहीं सुने पुकार ।

अभिषेक, वर्ग-VII

बबलू-बबली के चुटकुले

- बबलू - पिताजी आईस्क्रीम खाऊँगा ।
  पिताजी - नहीं बेटे बहुत ठंड है ।
  बबलू - तो रजाई में बैठकर खा लूँगा
- बबली - तुम्हारे पापा बहुत डरपोक हैं ।
  बबलू - वो कैसे ?वे तो पुलिस हैं ।
  बबली - क्योंकि वह हमेशा बंदूक अपने पास ही रखते हैं ।
- शिक्षक - (बबलू से) - न तो तुम्हें अंग्रेजी आती है और न हिंदी, मैथ में भी तुम बहुत कमजोर हो, आखिर तुम्हें आता क्या है ?
  बबली - (फटाक से बोली) - सर ! इसे पढ़ाई के नाम पर पसीना आता है ।

हे भगवान

बच्चे सब कर रहे थे जम्प
तभी हुआ चारो तरफ हड़कंप
बचो ..... बचाओ .... भागो .... !
हो रहा भूकंप .... !
बच्चे सब हैरान
और बूढ़े परेशान
जो भी जहाँ था
पुकारता हुआ हे भगवान .... !
हे भगवान .... !

आनन्द राज

कहानी

जरा देखो तो

दोपहर का वक्त था । घर के सभी लोग भोजन करने के लिए बैठे। छवि के पिताजी भी काम करके घर खाना खाने आए । छवि की मम्मी ने सभी के लिए खाना लगाया । छवि ने खाना का पहला कौर मुँह में डाला और जैसे ही वह पानी पीने के लिए अपना हाथ गिलास की ओर बढ़ा ही रही थी कि अचानक गिलास थर-थर्राने लगा । यह देख वह बहुत डर गई और झट से अपनी माँ से बोली, अरे माँ, देखो न गिलास हिल रहा है ? इतना सुन उसकी माँ ने हैरान होकर गिलास को देख रही थी। गिलास सच में हिल रहा था । तभी छवि के दादा जी बोल पड़े अरे बहू, जल्दी से छवि को लेकर बाहर भागो ! भूकंप आया है । बाहर से कुछ आवाजें आने लगीं । भागो-भागो भूकंप आया है । यह सुन सभी बहुत घबरा गए । पूरा परिवार बाहर की ओर भाग पड़े । ''बेटा-बेटा, थोड़ा रूको, ऐ .... । ''छवि के दादा जी ने चिल्लाते हुए अपने बेटे को आवाज दी । तबतक वह भाग चुके थे । उसी बीच छवि ने पीछे मुड़ कर देखा कि उसके दादाजी उठ नहीं पा रहे हैं । वह दौड़कर गई और अपने दादाजी को उठाया, तब तक सभी बाहर निकल पड़े थे । ऊपर से कुछ सामानें गिरने लगी । ''बेटा इधर पलंग के नीचे छिपो ।'' दादाजी बोले । छवि अपने दादाजी के साथ पलंग के नीचे जा रही थी । जल्दबाजी में छवि पलंग से टकरा गई । उसके सिर से खून निकल पड़ा । छवि के दादा जी कंधे से गमछी निकालकर छवि का सिर दबाए, पलंग के नीचे छिपे रहे । कुछ देर बाद भूकंप रुका। दादाजी छवि के साथ पलंग के नीचे से धीरे-धीरे निकले। तब तक वह बेहोश हो गई थी । यह देख छवि के दादाजी घबरा गए उन्हें बेचैनी होने लगी । इसे क्या हो गया ? वह खिड़की के पास पहुँचे तो देखा । कुछ घर गिरे पड़े हैं । उन्होनें बेटे-बहू को आवाज लगाई, छवि के पिताजी अंदर आए । छवि के दादाजी गुस्से से उन पर बरस पड़े, मैंने यह भूकम्प रोधी घर आज यही दिन देखने के लिए बनवाया है ?अरे मूर्ख ! तुम कैसे इंसान हो ? हमें तो छोड़ा ही, अपनी बच्ची को भी छोड़ दिया ?इतना में ही ''छवि-छवि'' चिल्लाते हुए उसकी माँ आई । यह सुन छवि के दादाजी को और गुस्सा आया। तुम कैसी माँ हो? तुम्हारे सीने में दिल है या नहीं ?''

फिर वे अपनी बेटे की ओर देखते हुए बोले अब खड़े खड़े मुँह क्या देख रहे हो ?इसे जल्दी अस्पताल ले जाओ । छवि के पिताजी अंदर ही अंदर बहुत शर्मिंदगी महसूस करते हुए बोले, पिताजी भूकम्प के डर से हम सब अपनी ही जान बचाने के लिए भाग गए थे । हमसे बड़ी भूल हो गई । क्षमा कीजिए । यह कह छवि के पिता उसे उठाकर अस्पताल की ओर चल पड़े ।

प्रवीण कुमार

वर्ग-V

सब के उड़ गए तोते

कुछ लेटे थे, घर में
कुछ बेच रहे थे सामान,
अधिकारी से लेकर चाय वाले तक,
सब विपदा से थे अन्जान ।
एकाएक हलचल हुई,
काँपने लगी धरती ।
भागने लगे, सब लोग घरों से,
बाहर भी धूप कड़कती ।
पल में ही खड़ी ऊँची इमारतें,
ध्वस्त होकर गिर गई ।
भागने वाले कुछ बचे,
और कई जाने गयी ।
विज्ञान, तकनीक और सारे ज्ञान
दिखने लगे अब छोटे ।
देख प्रकृति का विकराल रूप,
सब के उड़ गए तोते ।

विवेक सुन्दरम

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

कैमरे में किलकारी

गुल्लक बना गुड लक

एक-एक, दो-दो के नोटों और सिक्कों की बचत को पांच साल में 21 लाख रुपए की रकम में तब्दील कर किलकारी के बाल बैंकर्स ने राजधानी में नया इतिहास रच दिया है । पांच वर्ष पूर्व महज पांच खातों से शुरू हुए आठ से सोलह वर्ष उम्र के बच्चों के गुल्लक बैंक के जरिए अब तक 35 लाख से अधिक का टर्न ओवर किया जा चुका है । यह कारनामा करके बच्चों ने गुल्लक को अपना गुड-लक साबित किया । प्रेमचंद रंगशाला में गुल्लक बैंक का पांचवां वार्षिकोत्सव एक और मील का पत्थर गाड़ गया । गुल्लक बैंक के चौथे प्रबंधक के रूप में घुँघरू आनंद ने चाभी ग्रहण की ।

प्रेमचंद रंगशाला में 8 से 16 वर्ष उम्र के बालक-बालिकाओं की भीड़ थी । दोपहर ठीक साढ़े तीन बजे दीप प्रज्जवलन के साथ पांचवे वार्षिकोत्सव का श्रीगणेश हुआ। स्वागत गान की औपचारिकता के बाद सबसे पहले नए प्रबंधक के नाम की घोषणा हुई । 16 वर्ष की उम्रसीमा पार कर चुके निवर्तमान प्रबंधक यशरंजन सिन्हा ने प्रतीक के रूप में चमचमाती हुई बड़ी सी चाबी गुल्लक बैंक की पहली बालिका प्रबंधक घुंघरू आनंद को सौंपी । आत्मविश्वास से भरपूर यशरंजन ने गुल्लक बैंक के पांच वर्षों के सफर का अनुभव बताया। धन निकासी के आंकड़े भी काफी रोचक रहे ।

सरिता रानी और आकाश कुमार ने उद्घोषणा उत्साहजनक अंदाज में की । सरिता रानी ने कहा रंगशाला में किलकारी के कितने 16 प्लस सदस्य हैं जरा हाथ उठाएं । सरिता चुप हुई ही थी कि आकाश ने शुरूआत की । सिर्फ हाथ उठाने से काम नहीं होगा, अब आप को मंच तक दौड़ कर आना भी है । खिलखिलाते हुए बच्चे मंच पर इक्ट्ठा होने लगे । 44 बच्चों के मंच पर आ जाने के बाद सरिता और आकाश ने भी यह कहते हुए बच्चों की कतार की ओर लपके कि हम दोनों को भी ग्रुप फोटो करानी है क्योंकि आप सब के साथ आज विदाई तो हमारी भी होनी है।

अनिता और राज सर्वश्रेष्ठ खाताधारी

बच्चा बैंक के दो सर्वश्रेष्ठ खाताधारियों को पुरस्कृत भी किया गया । मजदूर की बेटी मनोरमा उच्च विधालय में कक्षा दस की छात्रा अनिता कुमारी, (मुसल्लहपुर, पटना) ने 365 दिनों में 512 रुपए जुटाए और 36 बार अपने खाते से लेन-देन किया । वहीं बालक वर्ग में सिक्योरिटी इंचार्ज के बेटे राज कुमार सर्वश्रेष्ठ खाताधारी घोषित किया गया । गायत्री इंटरनेशनल स्कूल की छठी कक्षा के छात्र राज के खाते में 1304 रूपए हैं । कुल 51 बार लेन-देन में दो बार पांच-पांच सौ रूपए घर खर्च के लिए भी निकाले ।

वार्षिकोत्सव में बतौर अतिथि आमंत्रित बैंक अधिकारी छोटे बच्चों का सटीक बैंकिंग कौशल और उनके द्वारा की गई बचत का आंकड़ा देख कर भौचक थे । उन्होनें सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि जो कार्य हम लोग पढ़ाई-लिखाई करने के बाद कई परीक्षाएं देकर कर रहे हैं वही कार्य छोटे-छोटे बच्चे इतनी सहजता से कर रहे हैं, देख कर विश्वास नहीं होता । समारोह के मुख्य अतिथि बीएसई आईडी के प्रबंध निदेशक संजीवन सिन्हा, विशिष्ट अतिथि इंडियन ओवरसीज बैंक के मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक देवदत्त पाढी एवं प्रबंधक निरंजन सिंह थे । स्वागत किलकारी की निदेशक ज्योति परिहार ने किया ।

इस अंक के प्रतिभागी
वैष्णवी, राजकुमार, सत्यम, प्रवीण, अभिषेक, राहुल, राधिका, अंकिता, ईशू, दीपमाला, प्रिंस, शुभम, नेहा, नीलम, हेमा, सुष्मिता, यूवराज, I-II, अंकित, मनीता, सौरभ, खुशबू, प्रियंतरा ।
बाल सम्पादक-मुनटुन, रानी, आनंद, सम्राट, विष्णु, विवेक, मनीष, अतुल, अभिनंदन ।
संयोजक :- सुधीर कुमार
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना ।
विशेष सहयोग : राजीव रंजन श्रीवास्तव
कार्यालय : किलकारी, बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना- 800004, बिहार
मुद्रक : राकेश प्रिंटिंग प्रेस, जय माँ गिरिजा कम्प्यूटर्स, मो-9470047022

इस अंक के जवाब माथापच्ची :
- बुझो-बूझौवल : 13 और 14
- रेडियो
- पहेली
- मुर्गा
- फूटबॉल
- पतंग
- कूलर
- नाईं
- गुलड़

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ (बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार । इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं।) ★

(बच्चों के लिए समर्पित)